वर्ष - 20 दिसम्बर, 2024 अंक - 219

Regd. Postal No. Dehradun-328/2022-24
Registered News Paper RNI No. UTTBIL/2006/19407

सहायकारी शक्तियों के सूक्ष्म संरक्षण में

सत्य देव संवाद

प्रत्येक देश, प्रत्येक जाति, प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक सम्प्रदाय के ऐसे अधिकारी जनों को समर्पित है, जो ऐसी जीवन शिक्षा की खोज में हैं, जो धर्म और विज्ञान में सामंजस्य स्थापित कर पूरी मानवता को एक सूत्र में पिरो सके और उनका सर्वोच्च आत्मिक हित कर उन्हें प्रकृति के विकासक्रम का साथी बनाकर मनुष्य जीवन को सफल व ख़ुशहाल कर सके।

सम्पादक
नवनीत अरोड़ा

सहसम्पादक मण्डल
अनिता, चन्द्र गुप्त, वीरेन्द्र अग्रवाल

(सभी पद अवैतनिक हैं।)

ग्राफ़िक डिज़ाईनर : आरती

YouTube Channels

Sadhan Sabhas : Shubhho Roorkee
Motivational : Shubhho Better Life
Workshops : Jeevan Vigyan
Bhajan : Shubhho Bhajan
www.shubhho.com

लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मूल्य (प्रति अंक): रु. 9

सम्पर्क सूत्र : **पत्रिका सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु**
दूरभाष संख्या: 01332-272000, 80778-73846, 99271-46962 (संजय जी)
समय : प्रतिदिन सायं 5:00 से सायं 9:00 तक (रविवार को छोड़कर)
e-mail: Shubhho.rke@gmail.com or navneetroorkee@gmail.com

इस अंक में

देववाणी	03
महाशिविर सूचना	04
आत्मबल विकास महाशिविर...	06
देवात्मा का परिचय	07
भगवान् देवात्मा का आरम्भिक..	10
समाज सुधारक के रूप में	11
धर्म दार्शनिक के रूप में	13
इष्ट देव के रूप में	17
मनुष्य और देवात्मा	19
सुन्दरता का अन्तर	20
अद्वितीय है रूप तुम्हारा	24
शोक समाचार	26
Goodness is Everyday..	27
प्रेरणास्पद उद्बोधन सेवा	32

पत्रिका सहयोग राशि

पत्रिका हेतु सहयोग राशि आप सामने दिये QR CODE या Mission Website - https://shubhho.com/donation./ पर भेज सकते हैं। सहयोग राशि भेज कर Screenshot 81260 - 40312 पर भेजें।

Scan & Pay through any Bharat QR/UPI App

SATYA DHARAM BODH MISSION

Our Bank Details

Satya Dharam Bodh Mission A/c No. 4044000100148307
(PNB) IIT, Roorkee, RTGS/IFSC Code : PUNB0404400

पत्रिका की सॉफ्ट कॉपी (फ्री) मंगवाने हेतु 81260 - 40312 इस नम्बर पर सूचित करें।

पत्रिका चन्दा

1. रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा (दो माह की पत्रिका एक साथ) - वार्षिक सहयोग - 250/-
2. साधारण डाक द्वारा (प्रति माह) - वार्षिक सहयोग - 100/-

सात वर्षीय रु. 500, पन्द्रह वर्षीय रु.1000

अधिक जानकारी हेतु सहयोगकर्त्ता

Call/Whatsapp - 81260 - 40312

जीवन में बड़ों का आशीर्वाद भी उतना ही ज़रूरी है जितना एक पौधे को पनपने के लिए पानी।

देववाणी

हित का मार्ग ही भला है। हित का मार्ग ही धर्म का मार्ग है। अहित का मार्ग अधर्म का मार्ग है। काश, तुम लोगों में ऐसी आकांक्षा पैदा हो कि धर्म के मार्ग में जो आता है सो आ जाए! जो जाता है सो जाए, हमें ऐसे आत्मा मिलें कि जो धर्म के मुकाबले में किसी चीज़ की परवाह न करते हों! हमारे काम के वही जन हैं जो कहते हों, हमारे गुरु जो आज्ञा देंगे, वह हम करेंगे। हम गुरु से बाग़ी न बनेंगे।

– देवात्मा

गुदगुदी

(1)

बीवी की बनाई सब्जी में पनीर न मिलने पर पति ने हिम्मत करके पूछा।
पति – क्या यह पनीर की सब्जी है?
पत्नी – चुपचाप खा लो, 'खोया पनीर' बनाया है।

(2)

पहले मुझे लगता था कि रंग केवल सात होते हैं....
फिर एक दिन मैं पत्नी के साथ नेलपॉलिश लेने चला गया।
तब जा के समझ आया की कि आलू और कटहल जैसा रंग भी होता है।

(3)

मैं अकेला ही निकला था ज़िन्दगी का दही जमाने...
रास्ते में बून्दी जैसे दोस्त मिलते रहे और ज़िन्दगी का रायता बनता गया।

(4)

साइंस टीचर – क्लास में सो रहे हो क्या?
विद्यार्थी – नहीं सर, गुरुत्वाकर्षण के कारण सिर नीचे गिर रहा है।

कोई भी व्यक्ति हमारा मित्र या शत्रु बनकर संसार में नहीं आता। हमारा व्यवहार और हमारे शब्द ही लोगों को मित्र और शत्रु बनाते हैं।

महाशिविर सूचना

अपार हर्ष व गौरव की बात है कि परम पूजनीय भगवान् देवात्मा का 174 वाँ शुभ जन्म महोत्सव हरमिलाप धर्मशाला, साकेत कॉलोनी, रुड़की में बड़ी धूमधाम से दिनांक 17 से 20 दिसम्बर, 2024 को आत्मबल विकास महाशिविर के रूप में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आप अवश्य पधारें।

जो जन सेवाकारी बनना चाहते हैं,15 दिसम्बर को आ जायें। शेष प्रतिभागी 17 दिसम्बर दोपहर तक पहुँच जायें तथा 20 दिसम्बर दोपहर बाद प्रस्थान कर सकते हैं। रेल से आने वाले जन तदनुसार रिजर्वेशन करवा लें। आप अपना रजिस्ट्रेशन 81260-40312 पर करवा लें। 'शुभ हो!' परिवार की ओर से सभी को भावपूर्ण निमन्त्रण दिया जाता है।

महिमा विषयक भजन

शरण तुम्हारी आकर सतगुरु, जीवन का पथ दिखता है;
तुमरी ज्योति में हे भगवन्, ज्ञान जीवन का मिलता है।
तुमरा अनुगत बनकर सतगुरु, जीवन नाश से बचता है;
तुम संग बन्धकर मेरा जीवन, धर्म भावों में बढ़ता है।
तुम पर निर्भर करके आत्मा, सत्य मार्ग में चलता है;
जिस मार्ग में रक्षा और हित, उसको ग्रहण करता है।
श्रद्धा सूत्र में बन्धकर तुम संग, नीच जीवन सब कटता है;
तुमरा उच्च जीवन हे सतगुरु, धीरे-धीरे मिलता है।
तुम से कट कर मेरे सतगुरु, नाश दिनों दिन होता है;
अन्धकार में रहकर प्राणी, निज जीवन बल खोता है।

व्याख्या

इस भजन की व्याख्या एवं हमारी वर्तमान अवस्था को निम्न पंक्तियों में स्पष्ट किया गया है -

शरण तुम्हारी आकर सतगुरु, जीवन का पथ दिखता है;
तुमरी ज्योति में हे भगवन्, ज्ञान जीवन का मिलता है।

व्याख्या - यहाँ सतगुरु की शरण में जाने के महत्त्व को बताय गया है। सतगुरु की

असली सुन्दरता चेहरे की सुन्दरता तक सीमित नहीं होती। उसके लिए चाहिए उच्च भावों से ओतप्रोत एक सुन्दर दिल व आत्मा जिससे सुन्दर विचार व सुन्दर वाणी उत्पन्न हो सकें।

शरण में जाने से जीवन का सही पथ दिखाई देता है और उनकी ज्ञान की ज्योति से जीवन का सही अर्थ मिलता है।

वर्तमान अवस्था यह - उलझी हुई हो सकती है - क्या करूँ, अच्छा नहीं लगता, मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है। हमारे ये प्रश्न हो सकते हैं।

तुमरा अनुगत बनकर सतगुरु, जीवन नाश से बचता है;
तुम संग बन्धकर मेरा जीवन, धर्म भावों में बढ़ता है।

व्याख्या - सतगुरु का अनुगत बनकर जीवन नाश से बच जाता है और उनके साथ जुड़कर जीवन धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ता है

वर्तमान अवस्था - सम्भव है कि हमारा शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन में विकास तो हो रहा हो, किन्तु हम सुखी नहीं हैं, क्योंकि हमारा आत्मिक जीवन अधूरा है।

तुम पर निर्भर करके आत्मा, सत्य मार्ग में चलता है;
जिस मार्ग में रक्षा और हित, उसको ग्रहण करता है।

व्याख्या - सतगुरु पर निर्भर होकर आत्मा सत्य के मार्ग पर चलता है और उस मार्ग को अपनाता है, जिसमें उसकी रक्षा और हित है।

वर्तमान अवस्था - घर पर ताले मजबूत हैं, हेल्थ इंश्योरेंस भी है, देश भी अच्छा और सुरक्षित है, पर आत्मा को नीच गतियों की हानि से कौन बचाए।

श्रद्धा सूत्र में बन्धकर तुम संग, नीच जीवन सब कटता है;
तुमरा उच्च जीवन हे सतगुरु, धीरे-धीरे मिलता है।

व्याख्या - सतगुरु के साथ श्रद्धा के सूत्र में बन्धकर नीच जीवन के सभी दोष कट जाते हैं और उच्च जीवन धीरे-धीरे प्राप्त होता है।

वर्तमान अवस्था (चिन्तन करे) - क्या मैं ज़िन्दा हूँ, मैं ख़ुश हूँ, मैं आनन्दित हूँ। मैं सदा शुभ और आनन्द में रहता हूँ (उच्च जीवन)।

तुम से कटकर मेरे सतगुरु, नाश दिनोंदिन होता है;
अन्धकार में रहकर प्राणी, निज जीवन बल खोता है।

व्याख्या - सतगुरु से अलग होकर जीवन नाश की ओर बढ़ता है और अन्धकार में रहकर प्राणी अपने जीवन की शक्ति खो देता है।

वर्तमान अवस्था - किसी समझ को जान लेना और उसकी ज़रूरत जानकर न अपनाना

धैर्य का मतलब इस बात से नहीं कि आप कब तक इन्तज़ार कर सकते हैं, किन्तु इस बात से है कि आप इन्तज़ार के दौरान अपना व्यवहार कैसा रखते हैं?

या प्रयासरत न रहना। जैसे पानी में डूबता रस्सी देखने पर भी न पकड़े।

इस भजन में सतगुरु की महत्ता और उनकी शरण में जाने के लाभों को दर्शाया गया है। यह सतगुरु की शरण में जाने के लिए प्रेरित करता है और उनकी ज्ञान की ज्योति से स्वयं के जीवन को उच्चतम बनाने का सन्देश देता है।

इस माह की पत्रिका समर्पित है उन अधिकारी हृदयों को, जो देवात्मा दर्शन की गहराई को समझकर अपने जीवन को अधिक अर्थपूर्ण और सार्थक बनाने के लिए निरन्तर प्रयास कर रहे हैं।

भगवान् देवात्मा के जन्मोत्सव के विशेष आयोजन में आप सभी का स्वागत है।

आत्मबल विकास महाशिविर (17-20 दिसम्बर, 2024)

भावपूर्ण निमन्त्रण

17-12-2024, मंगलवार

सायं 5:30 से 7:00 बजे : प्रार्थना, शारीरिक एवं आत्मिक हीलिंग सत्र

रात्रि 8:30 से 9:30 बजे : भजन वेला (प्रार्थना विषयक)

18-12-2024, बुधवार

प्रात: 5:30-6:30 बजे	:	सुप्रभात साधन
प्रात: 10:00-12:00 बजे	:	मानवता की ओर - एक संगोष्ठी
सायं 4:00 - 5:30 बजे	:	शिक्षा, शिक्षार्थी व शिक्षक - एक संगोष्ठी
सायं 6:00-7:00 बजे	:	देवात्मा की देन - नेचर तत्व
रात्रि 8:30-9:15 बजे	:	भजन वेला (उपकार स्मरण)

19-12-2024, बृहस्पतिवार

प्रात: 5:30-6:30 बजे	:	सुप्रभात साधन
प्रात: 9:00-10:15 बजे	:	देवात्मा की देन - सत्य व मिथ्या तत्व
प्रात: 10:15-11:30 बजे	:	मनुष्यात्मा की गठन (Anatomy of Soul)
दोपहर 12:00 बजे	:	देवाश्रम (फेज़ - II) विजिट
सायं 4:00-5:00 बजे	:	बाल सभा
सायं 5:30-7:00 बजे	:	सम्बन्ध तत्व के शिक्षक-देवात्मा
रात्रि 8:30-9:15 बजे	:	चिन्तन-2024 एवं संकल्प-2025

हमें तभी बोलना चाहिए, जब हमारा बोलना चुप रहने से ज़्यादा सुन्दर व हितकर हो। आओ, पहले तोलें, फिर बोलें।

20-12-2024, शुक्रवार

(परम पूजनीय भगवान् देवात्मा का शुभ जन्म दिवस)

प्रातः 6.00 बजे	:	भजन, जन्म वेला की महिमा
प्रातः 9.00-11:00 बजे	:	विकासक्रम की देन देवात्मा एवं देवात्मा की देन सत्यधर्म
प्रातः 11:30 बजे	:	शिष्य ग्रहण एवं समापन सत्र

शिविर स्थल - हरमिलाप धर्मशाला, सॉकेत, रुड़की

सम्पर्क सूत्र - 99271-46962, 94672-47438

देवात्मा का परिचय

(प्रो.एस.पी.कनल जी द्वारा लिखी पुस्तक पर आधारित)

भूमिका

मनुष्य जीवन के लिए इससे बड़ा और कोई वरदान नहीं कि उसे किसी अपने से अति श्रेष्ठ आत्मा के साथ सम्पर्क, संगत और योग हो। भावुक सात्विक मनुष्य ऐसे उच्च सम्पर्क और संगत में अपने जीवन का अर्थ, मूल्य, सफलता और मोक्ष अनुभव करते हैं; उनका गान करते हैं, उनका मंगल मनाते हैं। यह लेखमाला ऐसे सौभाग्यवान् पाठकों के लिए लिखी गई है जो या तो अति अद्वितीय इष्ट देव की खोज में हैं या ऐसे पाठकों के लिए है कि जिनको अति अद्वितीय इष्टदेव तो प्राप्त है और वह उनके प्रति श्रेष्ठ जीवन को ज़्यादा से ज़्यादा समझने, सराहने और उसके साथ योग करने की प्रबल इच्छा रखते हैं।

हम ऐसे सौभाग्यवान् धर्म अभिलाषियों को अपने महान् महागुरु भगवान् देवात्मा से परिचित कराते हैं, ताकि वह स्वयं देख सकें कि किस प्रकार भगवान् देवात्मा सब अधिकारी आत्माओं के मोक्ष और विकास के लिए एकमात्र सत्यदेव हैं।

जितना हमारा जीवन दूसरे के जीवन के स्तर से दूर हो, उतना ही हम उसे समझ नहीं पाते, चाहे हमारे अनुभव और उनके अनुभवों में कुछ समानताएँ भी क्यों न हों। एक वैज्ञानिक और एक अनपढ़ के इन्द्रीय अनुभव समान हैं। वह दोनों इन्द्रीय अनुभवी दुनिया से परिचित हैं। एक वैज्ञानिक और एक अनपढ़ की घटनाओं के समझने की विधि आकार रूप से एक है। जब कोई घटना होती है, तो वह दोनों उस घटना की जाँच करते हैं, उस घटना के कारण के प्रति प्राक्कल्पना बाँधते हैं। उस

आपकी महानता इस बात में नहीं कि आपके पास कितना है,
बल्कि इस बात में है कि आप संसार को क्या देते हो?

प्राक्कल्पना से नतीजे निकालते हैं और इन नतीजों की परख करते हैं। मान लो घर का ताला टूटा-सा दिखता है। हम निरीक्षण करते हैं कि वह सचमुच टूटा हुआ है या नहीं। उसको टूटा हुआ पाकर इसका कारण ढूँढ़ने के लिए प्राक्कल्पना बाँधते हैं कि कोई चोर आया होगा। हम इस प्राक्कल्पना से नतीजा निकालते हैं कि हमारी मूल्यवान चीज़ें चली गई होंगी। हम घर में जाकर देखते हैं कि यह चीज़ें गुम हैं या नहीं। स्पष्ट है कि हम वैज्ञानिक विधि के चारों पदों अर्थात् घटना का प्रेक्षण (Observation and determination of facts or data); घटना के सम्बन्ध में प्राक्कल्पना (Construction of hypothesis); प्राक्कल्पना के आधार पर नतीजे निकालना (Deduction from hypothesis) और नतीजों की सत्यापनीयता (Verification of deduction) का पालन करते हैं। परन्तु वैज्ञानिक ने साधारण विधि के प्रत्येक पद को इतना सूक्ष्म कर लिया है और इसके प्रयोग द्वारा इतना सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त कर लिया है कि हम पढ़े-लिखे होकर भी उनकी विधि और उनकी खोजी हुई सच्चाइयों को समझने में असहाय रहते हैं। इसका साक्षात् अनुभव करना है तो आप भौतिक विज्ञान की पत्रिका या पुस्तक को खोलकर पढ़िए तो आपको अनुभव होगा कि वैज्ञानिक किसी और दुनिया की बोली बोल रहे हैं। हमें लगता है कि हम और वैज्ञानिक अलग-अलग दुनिया के वासी हैं।

हमने यह समझा कि किस प्रकार साधारण व्यक्ति और वैज्ञानिक भौतिक जगत् के सम्बन्ध में कुछ समान अनुभव और खोज विधि रखकर भी अलग-अलग दुनिया के वासी होते हैं। साधारण व्यक्ति वैज्ञानिक की समझ से बहुत नीचे रहता है। यही बात सात्विक जीवन पर भी लागू है और इस प्रकार स्पष्ट की जा सकती है। एक कुत्ते में वफ़ादारी का सुन्दर सात्विक भाव होता है और कई एक मनुष्य में भी वफ़ादारी का सुन्दर श्रेष्ठ भाव होता है। मनुष्य कुत्ते के सात्विक भाव को तो समझ सकता है। मनुष्य के सात्विक भाव में कुत्ते के सात्विक भाव के गुण सम्मिलित हैं। परन्तु कुत्ता मनुष्य के सात्विक भाव भली-भाँति नहीं समझ सकता है। मनुष्य की वफ़ादारी बहुत जटिल है।

मनुष्य में अहं बोध का विकास हुआ और इसके कारण उसमें आत्मविश्वास और आत्मनिर्णय के गुण विकसित हुए हैं। उसने विकास कोष बढ़ाया है। उसने अपने व्यक्तित्व का निर्माण किया है और स्वतन्त्रता को जीवन का अंग बनाया है। उसका व्यवहार ऐसे मनुष्यों के साथ है, जो उसकी न्याईं अपना अहं बोध, आत्मविश्वास, आत्मनिर्णय और स्वतन्त्र जीवन रखते हैं। एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति के साथ

जो स्वयं का मूल्यांकन और सुधार करे, वह सुखी। जो दूसरों का मूल्यांकन करे और उन्हें सीधा करने में अपनी शक्तियों को लगाए, वह दुःखी।

वफ़ादारी में उसका अहं, आत्मसम्मान, आत्मनिर्णय उसके विचार और दृष्टि खतरे बने रहते हैं, जिन पर उसे विजयी होना होता है। उसे अपने अहं, अपनी विचार दृष्टि अपने व्यक्तित्व को वफ़ादारी के साथ सामंजस्य करना होता है, जो एक कुत्ते को अपने मालिक के साथ वफ़ादारी की स्थिति में नहीं करना होता। मालिक के बुरा-भला कहने पर या बुरी तरह चलाने पर या उसकी इच्छा के विरुद्ध व्यवहार करने पर उसके अहं, आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता, स्वतन्त्रता और व्यक्तित्व पर कोई ठेस नहीं लगती, क्योंकि यह सब उसके जीवन के गुण नहीं है। इसके अतिरिक्त मनुष्य में कई पक्षों में वफ़ादारी होती है। एक व्यक्ति केवल अपने जीवनसाथी के साथ ही वफ़ादार नहीं, वह अपने धर्म के साथ भी वफ़ादार होता है, वह अपने उसूलों के साथ भी वफ़ादार होता है। यह विकासकारी पेचीदा मानसिक गठन मनुष्य की वफ़ादारी के लिए कई बार आँधी या तूफ़ान बन जाता है। जिनका कुत्ते के लिए सवाल ही नहीं उठता, कुत्ते की वफ़ादारी पूर्णता सरल है। उसके लिए वफ़ादारी और बेवफ़ाई में चुनाव नहीं। वफ़ादारी उसकी जाति का उसी प्रकार सर्व-साधारण गुण है, जिस तरह भूख और प्यास उसकी सर्वसाधारण प्रेरणाएं हैं। मनुष्य में सोच-विचार है, मूल्यों का अनुभव है। वह केवल व्यक्तियों के लिए ही वफ़ादार नहीं देखा जाता, वह उसूलों और आदर्शों के लिए भी वफ़ादार देखा जाता है। मनुष्य की वफ़ादारी के लिए अनेक विरोधी खिंचाव हैं, जो कुत्ते के लिए नहीं। कुत्ते की वफ़ादारी के अपने बाल-बच्चों और घर को त्याग करने की आज़माइश नहीं, उसे लगातार विरोधियों का सामना करने की कठिनाइयाँ नहीं। जहाँ मनुष्य के वफ़ादारी का सात्विक भाव है, वह कुत्ते की समझ से बाहर है, क्योंकि वह अधिक जटिल और श्रेष्ठ है।

मनुष्य और देवात्मा के सात्विक भावों में कुछ समानताओं के होते हुए भी असीम अन्तर है। हम मनुष्य सात्विक भाव रखकर भी देवात्मा के सात्विक भावों को समझने में असहाय हैं, क्योंकि उनके सात्विक भाव हित और सत्य अनुरागों में स्थित हैं। जैसे मनुष्य के सात्विक भाव पशुओं के सात्विक भावों से सोच-विचार, मूल्यों की समझ और सराहने और सामाजिक जीवन में स्थित है। हम इसलिए अपने आप अपनी योग्यताओं द्वारा उनके सात्विक भावों के गुणों को नहीं जान सकते।

मनुष्य के लिए देवात्मा के हित और सत्य अनुरागों में स्थित सात्विक भावों को समझने की सम्भावना है और वह यह कि देवात्मा के साथ सहयोग करके उनकी देव ज्योति में उनके देवरूप के दर्शन कर सके।

हमें जीवनभर सीखना बन्द नहीं करना चाहिए, क्योंकि ज़िन्दगी सिखाना कभी बन्द नहीं करती। आओ, जीवनभर विद्यार्थी बने रहें।

हम अपनी अयोग्यता को ख़ूब जानते हैं कि सत्य और शुभ मूलक जीवन को दर्शाना कितना कठिन है। मनुष्य की ज्ञान वृद्धि एक रिले दौड़ (वह दौड़ जिसमें दल का प्रत्येक व्यक्ति दौड़ का कुछ भाग ही तय करता है) जिसमें एक ने जो कुछ समझा, उसे दूसरे ने और आगे बढ़ाना है। और तीसरे ने दोनों की समझ का लाभ उठाकर ज्ञान को और आगे बढ़ाना है। हम इस रिले दौड़ के भागी हैं। हमने अपने अनेक उच्च देवधर्मी साधकों से बहुत कुछ ज्ञात और अज्ञात रूप से देवरूप के बारे में सुना और जाना है। हमने अपनी योग्यता के अनुसार इस रिले दौड़ में अपना भाग निभाया है। भविष्य में भाग लेने वाले ही बता सकेंगे कि हमने अपना भाग ठीक निभाया है या नहीं।

भगवान् देवात्मा का आरम्भिक जीवन

भगवान् देवात्मा हमारे गुरु जी का उसी प्रकार आध्यात्मिक नाम है, जिस प्रकार भगवान् बुद्ध, राजकुमार गौतम का आध्यात्मिक नाम है। भगवान् देवात्मा को उनके माता-पिता ने शिवनारायण का नाम दिया था। इनका जन्म अकबरपुर जिला कानपुर (उत्तर प्रदेश) में पौषवदी प्रतिपदा सम्वत 1907 वि0 (अर्थात् 20 दिसम्बर 1850 ई.) को सूर्योदय के समय हुआ। इनके जन्म के लिए इनके माता-पिता (श्रीमती मोहन कुँवर जी और श्रीयुत रामेश्वरजी अग्निहोत्री) ने आठ-दस वर्ष के लम्बे काल तक पाठ पूजा कराई। स्वभावतः ही इनके जन्म लेने पर परिवार में धूमधाम से ख़ुशियाँ मनाई गई और दान पुण्य किया गया। इनके परिवार के ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की कि यह बालक बड़ा विद्वान और प्रतापी होगा। इनके कॉलेज के प्रिंसिपल ने इनकी पढ़ाई और काम को देखकर इनके चरित्र-पत्र में लिखा कि वह एक दिन बहुत बड़ी श्रेष्ठता को प्राप्त होंगे।

गुरु जी जन्म से अति विशेष प्रकृति लेकर आए थे। वह ईर्ष्या, हिंसा, द्वेष और घमण्ड के आत्मनाशक भावों से जन्मकाल से मुक्त थे। उनमें किसी भी वासना ने कभी भी अधिकार न पाया। वह बीजावस्था में हित अनुराग और सत्य अनुराग की शक्तियों को लेकर पैदा हुए थे। हित अनुराग ने तो प्रारम्भ से ही विकास पाना शुरू कर दिया था। उनमें 16 साल की उम्र में बड़ों के लिए सम्मान का भाव, दया भाव, परिष्कारिता का भाव, वस्तुओं की उचित रक्षा का भाव; फूलों और पक्षियों के लिए आकर्षण भाव, आत्मसहाय का भाव, नियत समय का सम्मान, कर्त्तव्य पालन का भाव, कृतज्ञता का भाव, अभाव निवारण मूलक परसेवा भाव, औरों के उच्च और

दूसरों के बारे में बोलने में सभी हमेशा ही कुशल होते हैं, पर अपने बारे में नहीं जानते हैं। यदि जानते भी हैं, तो ग़लत ही जानते हैं।

हितकर गुणों के लिए आकर्षण, व्रत पालन का भाव, पूर्णता विषयक भाव, हितकर मेल विषयक भाव की कोपलें फूट चुकी थीं और तेज़ी से विकसित हो रही थीं। यह सब सात्विक भाव हित अनुराग स्थित थे और इसलिए इनका गुण मनुष्य के ऐसे सात्विक भावों से पूर्णता भिन्न और अद्वितीय था।

23 साल की आयु से 79 साल की आयु तक के जीवन को चार पक्षों में बाँटकर अध्ययन किया जा सकता है। उनका जीवन एक समाज सुधारक का जीवन है; नए धर्म के संस्थापक का जीवन है; धर्म दार्शनिक का जीवन है, और देवप्रभावों के विकास का जीवन है। हर एक पक्ष की अपनी निराली लीला है। आप संक्षेप में इन चारों पक्षों के सम्बन्ध में अगले अध्ययन 'देवात्मा का परिचय' नामक पुस्तक में कर सकते हैं।

समाज सुधारक के रूप में

हमारे गुरु जी भगवान् देवात्मा 23 साल की आयु में अर्थात् 1873 में लाहौर आए तो उनका सम्पर्क ब्रह्मो समाज के साथ हुआ। ब्रह्मो समाज धर्म और समाज की कई मिथ्याओं और बुराइयों को हटाने का प्रशंसनीय आन्दोलन था। यद्यपि ब्रह्मो समाज ने धार्मिक पूजा पाठ में सुधार किए, परन्तु उसका मुख्य उददेश्य सामाजिक बुराइयों को हटाना था। वास्तव में उन्होंने धर्म को समाज सुधार के साथ एक रूप किया। इस पक्ष का, हिन्दू धर्म में निरादर था। उस समय धर्म को ईश्वर या देवी-देवताओं की पूजा पाठ के साथ एकरूप किया जाता था और सामाजिक सुधार या सामाजिक कल्याण का पूरा निरादर किया जाता था। ब्रह्मो समाज की यह विशेषता थी कि उन्होंने सामाजिक सुधार और सामाजिक कल्याण को धर्म क्रियाओं में केन्द्रित स्थान दिया और पाठ पूजा को दूसरा स्थान दिया। उस समय ब्रह्मो समाज सब समाजों में प्रगतिशील समाज था। इसका समाज सुधार का कार्यक्रम हमारे गुरु जी के हितअनुराग के अनुकूल था, जिसने बचपन से ही उन्हें सामाजिक व्यवहार में सुधारक बना दिया था।

देवधर्म संस्थापक के रूप में

भगवान् देवात्मा की सुधार सेवा उनके पूर्वकालीन जीवन का एक अति सुन्दर पक्ष था। इस पक्ष के अतिरिक्त और इससे ऊपर उन्होंने समाज में उच्च जीवन परिवर्तन को अपना मिशन बनाया। समय के साथ उन्होंने देखा कि ब्रह्मो समाज में

ज़िन्दगी कुदरत का बेहतरीन तोहफ़ा है। आओ, इसे भरपूर जियें।

उच्च चरित्र और परसेवा के लिए यहाँ भी कोई उत्साह नहीं, केवल पाठ-पूजा और उपदेशों की ही धुन है। परन्तु उनके लिए नीच जीवन से मोक्ष और उच्च जीवन का निर्माण धर्म का अर्थ था। इस धर्म के नए विचार को लेकर ब्रह्मो समाज में चरित्र सम्बन्धी उदासीनता से दु:खी होकर उन्होंने 1887 में सत्यधर्म व देवसमाज की नींव रखी, जिसमें चरित्रवान या उच्च जीवन को सत्यधर्म और अपनी समाज में मुख्य और केन्द्रित स्थान दिया।

सत्यधर्म हमारे गुरु जी के देवजीवन का महान् करिश्मा है। कोई ऐसा जन इसका सभासद नहीं हो सकता जो आठ बुरे व्यवहारों या पापों को न छोड़ चुका हो अर्थात् माँसाहार नशे, धूम्रपान, रिश्वत, जीव हत्या, चोरी, बदचलनी, बेईमानी और जुआ। कोई भी धर्म लोगों को पाप छुड़वाकर अपना सभासद बनाने और इस प्रकार नई समाज निर्माण करने का काम नहीं करता। बाकी समाजें ईश्वर की पूजा-पाठ और दुनिया से वैराग के उपदेशों से ही तसल्ली कर लेती हैं। पापों के छुड़वाने को केन्द्रित स्थान देना सत्यधर्म का ही गौरव है।

इन आठ पापों को छुड़वाना सत्यधर्म में उच्च जीवन का पहला स्तर है। जब कोई जन उपरोक्त आठ पाप छोड़कर सत्यधर्म में प्रवेश करता है तो उसे नीति जीवन के दूसरे स्तर में प्रवेश कराया जाता है। उसे अपने माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, वंश, परलोक-प्राप्त सम्बन्धी, समाज, जाति, देश और मनुष्य जाति के साथ घनिष्ट सम्बन्ध को उपलब्ध करने और इन सम्बन्धों के लिए सराहना, स्नेह, कृतज्ञता और परिशोध के भावों के जागृत और उन्नत करने के साधनों में लगाया जाता है। किसी अन्य भी धर्म में एक साल को सोलह भागों में बाँटकर एक-एक सम्बन्ध में उपदेश और चिन्तन के साधन नहीं किए जाते।

उनमें केवल ईश्वर के साथ सम्बन्ध की रट लगी रहती है और जो मूर्ति रूप से सम्बन्धी हैं अर्थात् माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी और जाति के सम्बन्ध को मिथ्या कहकर और इन सम्बन्धों के लिए सराहना, स्नेह, कृतज्ञता और सेवा को मोह कहकर उनके सम्बन्ध में कर्त्तव्यों के उदासीनता पैदा की जाती है। सत्यधर्म ही इन सम्बन्धों में सात्विक भावों के विकास को प्रमुख स्थान देती है। उसके लिए धर्म सब सम्बन्धों में सात्विक भावों के विकास को प्रमुख स्थान देती है। उसके लिए धर्म सब सम्बन्धों में उच्च कर्तव्य पालन का नाम है।

सत्यधर्म में तीसरा स्तर न्याय प्रभाव का विकास है। न्याय भाव का अर्थ

पैसा जब जेब में आता है, तो बहुत बड़ी ताक़त बनता है और वही जब दिमाग़ में घुस जाता है, तो हमारी सबसे बड़ी कमज़ोरी बन जाता है।

दूसरों के अधिकारों को पहचानना, भावुक रूप से स्वीकार करना और व्यवहार में लाना है। यह भाव समाज में न्यायमूलक सामाजिक संस्थाओं का आधार है। जब भगवान् देवात्मा ने लड़कियों के लिए स्कूल और कॉलेज खोले तो उन्होंने स्त्रियों के लिए न्यायपूर्ण संस्थाओं का आयोजन किया। यहाँ स्त्रियों और पुरुषों को बराबर के अधिकार देने, जात-पात और छूतछात के भेद के मिटाने का वातावरण न्याय भाव को विकसित करता है।

सत्यधर्म में नीति जीवन का चौथा स्तर यह है कि उसके सभासद को थोड़ा बहुत परसेवा के काम में लगाया जाए। इस विषय पर ज़ोर दिया जाता है कि परसेवा के बिना कोई धर्म जीवन नहीं हो सकता।

सत्यधर्म में नीति जीवन का पाँचवा स्तर हानि-परिशोध है। मनुष्य से अपने और अन्य विविध सम्बन्धों में हानिकारक व्यवहार हो जाते हैं। मनुष्य शराब, माँसाहार और काम भोग सम्बन्धी पापों के कारण अपने और दूसरों को हानि पहुँचाता है। वह अपने और दूसरों के सम्बन्ध में कर्त्तव्यों का निरादर करता है। वह स्वार्थी जीवन से समाज की सेवा में असफल रहता है। सत्यधर्म में बुरे कर्मों, अभावों और असफलताओं के घृणित रूप को दर्शाया जाता है और उसके लिए घृणा और दु:ख पैदा किया जाता है और दूसरों की जो हानि की गई है उसके लिए परिशोध किया जाता है।

सत्यधर्म धर्म के इतिहास में पहला धर्म है जिसके नीतिशास्त्र और नीति साधन का उददेश्य विश्व के अनगिनत सम्बन्धों में सात्विकता और स्नेह लाना है। सत्यधर्म दुनिया से वैराग नहीं सिखाता। साधारणत: वैराग का अर्थ सम्बन्धों से उदासीनता या सम्बन्धों से कटने से है। सम्बन्धों में कोई बुराई नहीं। यदि सम्बन्ध स्वार्थ और हानिकारक मोह पर आधारित हों, तो ऐसे भावों से वैराग सच्चा वैराग है।

यदि सम्बन्ध स्वार्थ की जगह निस्वार्थ सेवा और कर्त्तव्य पर आधारित हों, तो सम्बन्ध मनुष्य के आध्यात्मिक जीवन के लिए वरदान हैं। क्योंकि इस इन्द्रीय दुनिया से बाहर उसके लिए कोई दुनिया या अस्तित्व नहीं। सत्यधर्म इस दुनिया के अस्तित्वों या जनों के साथ सात्विक भावों द्वारा उच्च मेल और उच्च शान्ति स्थापित करता है। यह हमारे गुरु जी की अद्वितीय देन है।

धर्म दार्शनिक के रूप में आठ सिद्धान्त

हमारे गुरु जी देवात्मा हैं। कोई गुरु नहीं जिसने अपने में हित अनुराग स्थित

जीवनरूपी परीक्षा में अंक नहीं मिलते। यदि हमें लोग दिल से याद करते हैं, तो समझो हम उत्तीर्ण हो गए।

सब सात्विक शक्तियों का विकास किया हो और चारों जगतों के साथ सम्बन्ध जोड़कर उनके साथ हितकर व्यवहार में सिद्धि न समझी हो। ईश्वरवादी धर्म के बानी तो ईश्वर और केवल ईश्वर के साथ सम्बन्ध को जोड़ते हैं और मनुष्यों, पशुओं, वनस्पति और भौतिक अस्तित्वों के साथ सम्बन्ध को जोड़ते हैं और मनुष्यों, पशुओं, वनस्पति और भौतिक अस्तित्वों के साथ सम्बन्ध को मोह माया घोषित करके, उनके प्रति उदासीन रहते हैं। इसके विपरीत हमारे गुरु जी, भगवान् देवात्मा ने चारों जगतों के साथ सत्यमूलक सम्बन्ध स्थापित करके उनके प्रति कर्तव्यों की खोज करके और उन्हें अपने जीवन में पूरा करके विश्व के साथ उत्तम मेल और एकता को प्राप्त किया है।

किसी भी ईश्वरीय धर्म के बानी ने विविध सम्बन्धियों जैसे माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, देश, जाति, मनुष्यमात्र, पशु, वनस्पति और उद्‌भित जगतों के सम्बन्ध में अपने कर्तव्यों का अनुसंधान करके उनके पालन को आध्यात्मिक जीवन का एक मुख्य पक्ष नहीं समझा और बनाया। हमारे गुरु जी ने इन सम्बन्धों में अनुसन्धान करके देवशास्त्र, खण्ड चार में कर्तव्यों और वर्जित कर्मों का विस्तारपूर्वक वर्णन दिया है और स्वयं इन सम्बन्धों में कर्तव्य पालन का आदर्श दृष्टान्त पेश किया है।

इसी प्रकार हमारे गुरु जी पहली धर्म प्रतिभा हैं, जिन्होंने आत्मा के अनुसन्धान में वैज्ञानिक विधि को पूर्ण रूप से अपनाया है। आत्मा का अनुसन्धान तो प्राचीन समय से विख्यात दार्शनिक और धर्म प्रतिभा करते आए हैं, परन्तु उनके अनुसंधान की विधि तार्किक परिकल्पनामूलक, अतः प्रज्ञामूलक और श्रुतिमूलक रही है। आधुनिक धर्म प्रतिभा जैसे श्री अरविन्दु, श्री रमण और अन्य रहस्यवादी धार्मिक नेताओं ने सत्य अनुराग की अनुपस्थिति के कारण वैज्ञानिक विधि को नहीं अपनाया।

वैज्ञानिक विधि के अपनाने पर ही आत्मा के सत्य ज्ञान की खोज सफल हो सकती है और हमारे गुरु जी ने सफल की है। उनके साथ सहयोग द्वारा और उनकी रचित पुस्तकों द्वारा मनुष्य अपने आत्मा के सम्बन्ध में ज्योतिर्मान हो सकता है। हमारे गुरु जी के देव जीवन में मनुष्य के लिए आत्मा के सम्बन्ध में ज्योतिर्मान होने, आत्मा के रोगों से मोक्ष पाने और सात्विक भावों के विकास द्वारा अपनी रक्षा करने और शक्ति और स्वास्थ्य को बढ़ाने की पूर्ण सामग्री है।

हमें अपने अहं को घटाने का लगातार प्रयास करना चाहिए। हममें जितना अहं कम होता है, उतना ही हम हल्का-फुलका महसूस करते हैं और सही मायनों में जीवन का आनन्द ले पाते हैं।

यह आठ सिद्धान्त देवधर्म दर्शन के सिद्धान्त हैं और यह देवधर्म दर्शन देवात्मा को अद्वितीय धर्म दार्शनिक का स्थान देता है।

नेचर या दिक काल नियमबद्ध अस्तित्व का विश्व सदा से है। इसका स्वभाव क्या है?

1. नेचर में जड़-शक्ति विशिष्ट या जीवित शक्ति या जीवित शरीर अर्थात् शरीर और आत्मा विशिष्ट अस्तित्व सदा बदलते रहते हैं। शक्ति अपने द्वारा जड़ पदार्थों को बदलती रहती है और अपने इस कार्य से आप भी नाना रूपों में परिवर्तित होती है। विश्व में नाना प्रकार के आकार और अन्य घटनाएँ इन्हीं दोनों के परिवर्तन से उत्पन्न होती हैं।
2. परिवर्तन शक्ति और जड़ के स्वभाव के अनुसार होता है और इसलिए एकरूप होता है। अस्तित्वों के एकरूप व्यवहार को अस्तित्व का नियम कहते हैं। अस्तित्वों के स्वभाव का दूसरा नाम नियम है।
3. परिवर्तन दो प्रकार के होते हैं। कुछ परिवर्तन ऐसे होते हैं जो अस्तित्व को बनाते और बढ़ाते हैं। कुछ परिवर्तन ऐसे होते हैं जो उसके अस्तित्व को बिगाड़ते और नाश करते हैं। हमारे शरीर के अंगों का स्वस्थ कार्य उसे बनाए रखता है। हमारे शरीर के अंगों का अस्वस्थ कार्य शरीर का नाश करता है। परिवर्तन केवल अस्तित्वों को बनाए ही नहीं रखते, लेकिन उनमें नए गुण भी पैदा करते हैं। जब परिवर्तन ऐसे नए गुण पैदा करे, जो अस्तित्व की रक्षा के अतिरिक्त उसे अधिक योगवान और गुणवान् बनाए तो उसे विकासकारी परिवर्तन कहते हैं और गुणों का जो परिवर्तन इसके विरुद्ध हो उसे विनाशकारी परिवर्तन कहते हैं। उदाहरणार्थ जीवित अस्तित्व का आदि रूप एक सैल का था। इसमें कोई अंग न थे। लेकिन कुछ सैलों में ऐसी परिवर्तन योग्यता थी कि जो दूसरे सैलों के साथ मिलकर एक रूप होकर नई गठन बनाने की शक्ति रखते थे और इस प्रकार बहु सैल गठन के जीवधारी इस पृथ्वी पर हुए। हम मनुष्य जीवित अस्तित्वों के विकास की लड़ी में से एक हैं और हमारी शारीरिक गठन करोड़ों सैलों के आपस में मिलकर काम करने और कई एक अंगों के निर्माण करने के फलस्वरूप है। इसी प्रकार जीवित शक्तियों ने भी जीवित शरीर की न्याईं विकास पाया है। उन्होंने निम्न श्रेणी की दुःख-सुख भावशीलता से बढ़ते-बढ़ते मनुष्य में प्रत्यक्ष अनुभव, स्मृति, कल्पना, तर्क और भाव शक्तियों की गठन बना ली है। जैसे हमारा जटिल शरीर सरल जीवित शरीर से आरम्भ हुआ

अगर कोई हमें याद नहीं कर पाता, तो हमें कर लेना चाहिए। रिश्ते व मित्रता निभाते वक़्त मुकाबला नहीं करना चाहिए। आओ, दिल बड़ा करें!

वैसे हमारा आत्मा पौधों के दुःख सुख की भावशीलता की अवस्था से उठकर और मानसिक और भाविक शक्तियों की जटिल गठन को प्राप्त हुआ है।

4. स्पष्ट है कि शरीर और आत्मा परिवर्तन नियम के फल हैं और इसलिए दोनों ही परिवर्तनशील हैं। यह मिथ्या विश्वास है कि शरीर तो बदलता रहता है परन्तु आत्मा नहीं बदलता। जब दोनों ही परिवर्तन की उपज हैं तो दोनों ही परिवर्तन के अधीन हैं। आत्मा अजन्मा नहीं, आत्मा अमर नहीं, आत्मा निर्लेप नहीं, आत्मा इस नेचर या दिक-काल से बाहर का अस्तित्व नहीं। इसका आरम्भ और भविष्य दिक-काल में और नियमबद्ध ही है।

5. शरीर के स्वस्थ कार्य करने के नियम हैं और इसी प्रकार आत्मा के स्वस्थ कार्य करने के भी नियम हैं। शरीर के स्वस्थ कार्य करने के लिए पौष्टिक भोजन, व्यायाम, साफ़ हवा और पानी कुछ स्वास्थ्य पूर्ण और इसलिए शुभकर परिस्थितियाँ हैं। इसके विरुद्ध अपाच्य भोजन या शराब, तम्बाकू और सुस्ती शरीर के लिए अस्वास्थ्यपूर्ण और इसलिए अशुभकर व्यवहार हैं। आत्मा के लिए सत्य विचार और सात्विक भाव शुभकर हैं। मिथ्या विश्वास और असात्विक भाव अशुभकर हैं।

6. मनुष्य में इतनी सामर्थ्य नहीं कि वह अपने आप अशुभकर भावों से मोक्ष पावे और शुभकर भावों की काश्त करे। धर्म मनुष्य के इस मोक्ष और विकास की आवश्यकता को पूरा करने का साधन है। धर्म पाठ पूजा का नाम नहीं, प्रार्थना का नाम नहीं, योग साधनों का नाम नहीं, अपने नीच स्वभाव से मोक्ष और उच्च स्वभाव में विकास का नाम है। यदि हमारा साधन हमें सात्विक सेवा के लिए प्रेरणा और शक्ति न दे और अपने स्वार्थ और अहं के लिए घृणा और उन्हें त्याग करने की शक्ति न दे, तो वह धर्म साधन नहीं। यह दोनों परिवर्तन ही धर्म साधन की कसौटी हैं।

7. ऐसे धर्म साधन के लिए मनुष्य में अपने आप योग्यता नहीं। उसे गुरु की ज़रूरत है। वह ही मनुष्य का सच्चा गुरु है, जिसके साथ योग द्वारा मनुष्य सात्विक भावों के विकास की प्रेरणा और शक्ति पा सके और अपने किसी नीच भावों या प्रेरणाओं से मोक्ष पा सके।

8. ऐसा गुरु वह ही हो सकता है जो सत्य और शुभ अनुरागी हो अर्थात् देवात्मा हो। देवात्मा वह है जिसका आत्मा हित अनुराग के कारण सब विनाशकारी भावों से मुक्त हो और जिसकी सात्विक भावों की गठन पूर्ण हो। और प्रत्येक सात्विक भाव

प्रायः हमारे पास हर समस्या का समाधान होता है, बस 'समस्या' दूसरे की होनी चाहिए। आओ, स्वयं पर उन्हीं सुझावों को लागू करें, जो हम दूसरों को देते हैं।

विस्तार, गहराई और परिपाटी में पूर्ण हो ताकि वह चारों जगतों के साथ हितकर सम्बन्ध स्थापित कर पावे। देवात्मा वह आत्मा है जिसमें सत्य अनुराग के कारण सब मिथ्याओं का त्याग करने की योग्यता हो और जिसके सब सम्बन्ध और व्यवहार सत्य-शुभ पर आधारित हों और जो आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में वैज्ञानिक खोज कर सके। ऐसे सत्य और हित अनुरागी देवजीवन में मनुष्य को आत्मिक सत्यज्ञान और सात्विक जीवन प्रदान करने की सामर्थ्य है।

इष्ट देव के रूप में

पाठक प्रश्न कर सकते हैं कि जब देवधर्म दर्शन निरीश्वरवादी है तो वह अपने गुरु को भगवान् के शब्द से क्योंकर सम्बोधित करता है? भगवान् के शब्द का अर्थ ईश्वर के साथ बन्धा हुआ नहीं। महात्मा बुद्ध को हिन्दू धर्म के अनुयायी भगवान् बुद्ध कहकर सम्बोधित करते हैं, यद्यपि महात्मा बुद्ध ने अपने आपको अवतार या ईश्वर का इकलौता बेटा या ईश्वर का पैगम्बर कभी घोषित नहीं किया। उनकी बौद्ध अवस्था में जिन चार आर्य सत्यों (चतवारी आर्य सत्याणि) और अष्टांगिक मार्ग का प्रकाश हुआ, उनमें ईश्वर का कहीं कोई स्थान नहीं। इसी प्रकार जैन लोग महावीर जी को भगवान् महावीर कहकर श्रद्धा और सम्मान देते हैं, यद्यपि जैन धर्म सृष्टि के किसी रचयिता और संचालक में विश्वास नहीं रखता। भगवान् का शब्द ऐसे आत्माओं के साथ लगाया जाता है, जो अति श्रेष्ठ आत्मिक अवस्था को प्राप्त हुए हैं।

भगवान् देवात्मा ने अपने सत्य और हित अनुराग से उत्पन्न ज्योति में शारीरिक और अहंसम्बन्धी सुखों के प्यार का जो अति घृणित नैतिक पक्ष प्रस्तुत किया है, उसका शंकराचार्य जैसे महान् धर्म दार्शनिक के दर्शन में भी वर्णन नहीं मिलता।

हमारे गुरु देवात्मा हैं। उनके विचार और व्यवहार सदा सत्य और शुभ से निर्णीत होते हैं। उन्होंने सुख के स्वभाव को अपनी सत्य और हित की रोशनी अर्थात् देवज्योति में अध्ययन किया और देखा कि वह असत्य और अशुभ की ओर ले जाने की प्रवृति रखता है। उन्होंने यह सत्य घोषित किया कि मनुष्य का आदर्श सुख के पीछे जाना नहीं, चाहे वह सुख कितना ही श्रेष्ठ क्यों न हो। उसे अपने विचार और व्यवहारों को सत्य के नियम के अधीन लाना है और तब ही उसका मोक्ष और विकास हो सकता है। ऐसे आदर्श की पूर्ति मनुष्य के अपने हाथ में नहीं। उसकी ज़्यादा से ज़्यादा पहुँच सात्विक सुखों तक है। उसके लिए मोक्ष और विकास तक ही सम्भव है यदि वह अपने

जीवन में यह महत्त्वपूर्ण नहीं कि आप क्या नहीं कर सके, बल्कि यह महत्त्वपूर्ण है कि अभी भी आप क्या कर सकते हैं?

सात्विक भावों द्वारा देवात्मा के साथ योग करे और उनकी ज्योति और शक्ति पाकर अपने विचार और व्यवहार निर्णीत करे। इसलिए मनुष्य का धर्म यह है कि वह सत्य और हित सम्पन्न देवात्मा के साथ अपने सात्विक भावों द्वारा सम्बन्ध स्थापित करे।

हमारे गुरु जी की आत्मा में ही सत्य और शुभ अनुराग हैं इसलिए वह ही एकमात्र इष्टदेव हैं। इस अभिकथन की साक्षी यह है। (1) उन्होंने 32 साल की आयु में अपने जीवन का आदर्श निम्नलिखित पक्तियों में घोषित किया –

सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे।
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे।

हमारे गुरु जी ने मनुष्यात्मा को भी यह शिक्षा दी कि जीवन का आदर्श सुख पाना नहीं, परन्तु अपने आत्मा के स्वास्थ्य को आदर्श बनाना है और मनुष्य के आत्मा का स्वास्थ्य वहाँ तक सम्भव है, जितना मनुष्य असत्य और अशुभकर विचारों और व्यवहारों से मुक्त हों और सत्य और शुभकर व्यवहारों में व्यस्त हो। धर्म का और कोई बानी नहीं जिसने सुख या आनन्द के ऊपर किसी आदर्श को अपने जीवन का लक्ष्य बताया हो या मनुष्यमात्र को सुख से ऊपर किसी लक्ष्य में शिक्षित किया हो।

भगवान् देवात्मा सत्य अनुरागी हैं। उनके साथ जो योग करता है उसे यह रोशनी मिलती है कि उसके सब सम्बन्धों में क्या ऋण हैं और उसे ऋण चुकाने की शक्ति मिलती है। उसे सात्विक परोपकार के जीवन की सुन्दरता सराहने की योग्यता मिलती है! और उसे अपनाने के लिए प्रेरणा मिलती है। ऋण या कर्तव्य न चुकाने के लिए दुःख होता है और उसे उनको पूरा करने की प्रेरणा मिलती है। देवात्मा के साथ सहयोग द्वारा सत्य और शुभ को स्वीकार करने की थोड़ी बहुत रोशनी मिलती है। इस पर चलने की थोड़ी बहुत सामर्थ्य मिलती है। इससे बड़ी क्या साक्षी हो सकती है कि भगवान् देवात्मा सत्य और शुभ अनुरागी जीवन रखते थे जो उन्हें इष्ट देव होने की अद्वितीय पदवी देता है।

इसके अतिरिक्त जैसा हम बता चुके हैं कि भगवान् देवात्मा ने नेचर और आत्मा के बारे में वैज्ञानिक विधि द्वारा वैज्ञानिक तत्वों की खोज की है जो किसी और धर्म गुरु ने नहीं की। आत्मा के सम्बन्ध में वैज्ञानिक खोज में सफलता उनमें सत्य और शुभ अनुराग के होने की नर्विवाद साक्षी है। क्योंकि इन अनुरागों की अनुपस्थिति में आत्मा के सत्यों की दुनिया नहीं खुल सकती।

ज़िन्दगी में मुश्किलों से घबराना नहीं चाहिए, क्योंकि जब तक हम जीवित हैं, तभी तक रूकावटे आती हैं, मुर्दे के लिए तो हर कोई रास्ता छोड़ देता है।

मनुष्य और देवात्मा के शुभकर जीवन में अन्तर

हम मनुष्यों में केवल सात्विक भाव ही नहीं है, हम में अनेक नीच अनुराग और नीच घृणाएँ भी हैं। इस अवस्था में हमारे सात्विक भावों पर नीच अनुराग और नीच घृणाओं का प्रभाव पड़ता है। अहं सम्बन्धी नीच अनुराग सब नीच अनुरागों की अपेक्षा अधिक विश्वव्यापी है और यह भाव सात्विक भाव के व्यवहार में भी अपनी तृप्ति ढूँढ लेता है।

भगवान् देवात्मा सब प्रकार के नीच भावों और नीच घृणाओं से मुक्त हैं। उनका कहना है कि वह ईर्ष्या द्वेष, हिंसा और घमण्ड के नीच भावों से जन्मकाल से ही पूर्णतः रहित थे और रहित ही रहे। इसी प्रकार उनका कहना है कि उनमें कोई नीच अनुराग व नीच घृणा उत्पन्न न हो सकती थी और न हुई।

जब मनुष्यात्मा और देवात्मा के भाव विषयक मनोविज्ञान में यह अन्तर है तो इससे स्पष्ट है कि देवात्मा के शुभ व्यवहार मनुष्य के शुभ व्यवहार से बाह्य पक्ष में एक होते हुए भी, बिलकुल अनोखे हैं। मनुष्य का सात्विक से सात्विक व्यवहार नीच अनुरागों और नीच घृणाओं की अपवित्रता से मुक्त नहीं हो सकता। इसके विपरीत भगवान् देवात्मा का छोटे से छोटा व्यवहार भी पूर्णतः शुभ भावों से पुनीत है!

पूर्णता का अन्तर

हमने मनुष्य के सात्विक भावों में चार अपूर्णताएँ पाई हैं अर्थात् मनुष्य के सात्विक भाव (क) गिनती के दृष्टिकोण से अपूर्ण हैं; (ख) वह विस्तार में बहुत सीमित है; (ग) उनमें जिस अनुपात में गहराई होनी चाहिए उसका अभाव है; (घ) वह उस परिपाटी में आकर्षण, विश्वास, श्रद्धा और कृतज्ञता आदि अनुभव नहीं करते जो गुणों की परिपाटी है अर्थात् हमारे सात्विक भाव इन गुणों को उस परिपाटी से नहीं देखते और न ही उसके प्रति इस परिपाटी में विश्वास, सराहना, गहराई रखते हैं जिसमें होनी चाहिए।

हमने यह प्रश्न उठाया था कि यदि मनुष्य में केवल सात्विक भाव ही हों और उनमें कोई नीच भाव न हो तो क्या तब भी मनुष्य और देवात्मा के शुभ व्यवहारों में कोई भेद रह जाता है? अब हम इस प्रश्न का हाँ में उत्तर दे सकते हैं। सात्विक जीवन के स्तर पर भी मनुष्य और देवात्मा के भावों में भेद है। मनुष्य के सात्विक भावों में उपरोक्त दी गई चार अपूर्णताएँ हैं, इसलिए उसके शुभ व्यवहार सात्विक भावों के प्रतिनिधि होने के नाते अपूर्ण हैं। इसके विपरीत भगवान् देवात्मा के सात्विक भाव इन

ज़िन्दगी में प्रेम देना व पाना ही सच्ची ख़ुशी है। आओ,
यह काम सबसे पहले करें!

चारों अपूर्णताओं से मुक्त हैं। उनके सात्विक भावों की गिनती पूर्ण है। उनके सात्विक भावों की विशालता पूर्ण है। उनके सात्विक भावों की गहराई पूर्ण है। उनके सात्विक भावों में पूर्ण परिपाटी है। इसलिए उनके शुभ व्यवहारों में पूर्णतः का गुण है, जहाँ हमारे शुभ व्यवहारों में अपूर्णता का दोष है।

संक्षेप में मनुष्य और देवात्मा के शुभ व्यवहारों में जहाँ पहला अन्तर भावों की पवित्रता है, वहाँ दूसरा अन्तर भावों की पूर्णता का है।

सुन्दरता का अन्तर

किसी अस्तित्व के संवेदी गुणों और सुन्दरता में यह अन्तर है कि उसके गुणों को हम अपनी अँगुली के इशारे से दिखा सकते हैं; परन्तु उसकी सुन्दरता की ओर निर्देश नहीं कर सकते।

हम एक पेन्सिल की ओर इशारा करके बच्चे को बता सकते हैं कि इसका रंग लाल हैं। इसका आकार गोल है। इसकी लम्बाई 6 ईंच है, गोलाई या घेरा आधा ईंच है। लेकिन सुन्दरता गुणों की तरह इशारे से नहीं दिखाई जा सकती। सुन्दरता किसी अस्तित्व के गुणों में से एक गुण नहीं; वह अस्तित्व के समस्त गुणों की गठन से सम्बन्ध रखती है। वह अंगों और गुणों के सम्पूर्ण गुणों का गुण है। यह गुण तब प्रकाश पाता है जब किसी अस्तित्व के अंग गिनती में पूर्ण हों और यह अंग अपने में पूर्णतया परिपक्व अवस्था में हों और इन गुणों का एक-दूसरे के साथ अनुपात में सन्तुलन हो।

मनुष्य के शरीर का दृष्टान्त लीजिए। किसी मनुष्य का शरीर तब ही सुन्दर कहा जा सकता है, जब उसमें अंगों की गिनती पूर्ण हो। यदि किसी शरीर में कान न हों या बाहें न हों, या टाँगें न हों, तो ऐसा शरीर सुन्दर नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार यदि किसी शरीर के अंग तो सब हों, लेकिन अंग परिपक्वता या पूर्णतः को न प्राप्त हुए हों, तो भी शरीर सुन्दर नहीं। यदि वह ठिगना रह गया हो या सिर छोटा रह गया हो या बाँह पोलियो के कारण पनपी न हो, तो भी शरीर सुन्दर नहीं कहा जा सकता। यदि अंग पूर्ण क्यों न हों, यह साधारण परिपक्वता को प्राप्त क्यों न हुए हों, परन्तु यदि इन अंगों का आपस में ठीक अनुपात न हो, तो भी शरीर सुन्दर नहीं।

किशोरावस्था में शरीर के अंग एक साथ और एक गति पर विकसित नहीं होते। कभी एक अंग विकास करता है, तो कभी दूसरा अंग बहुत कम या नाममात्र

आओ, आज से मुस्कुराने व दुआ करने का कारण न खोजें! बस देते चलें, क्योंकि इन दोनों को देने से हमारा जाता तो कुछ भी नहीं,
बल्कि मिलता ही मिलता है।

विकसित होता है। ऐसी किशोरावस्था में अंगों का अनुपात एक-दूसरे के सम्बन्ध में सन्तुलन का नहीं होता और शरीर कुरूप लगता है। यह शरीर जब परिपक्व अवस्था को प्राप्त होता है, तो उसके अंगों का परस्पर अनुपात ठीक हो जाता है और वह सुन्दर लगने लगता है।

स्पष्ट है कि हम तीनों कसौटियों से किसी अस्तित्व की सुन्दरता का मूल्यांकन करते हैं अर्थात् क्या उसके अंगों की गिनती पूर्ण है? क्या प्रत्येक अंग का पूर्ण विकास है? क्या अंगों का परस्पर अनुपात ठीक है? इन कसौटियों के आधार पर ही सुन्दरता प्रतियोगिता में उम्मीदवार की सुन्दरता का निर्णय किया जाता है।

गुणों और सुन्दरता में एक और दृष्टि से भी भेद किया जा सकता है। सुन्दरता किसी एक प्रकार के गुणों की गठन से बन्धी हुई नहीं है। एक शरीर सुन्दर हो सकता है, एक पेन्टिंग सुन्दर हो सकती है, एक गायन सुन्दर हो सकता है, एक आकार सुन्दर हो सकता है, एक उपन्यास सुन्दर हो सकता है, एक नाटक सुन्दर हो सकता है, हाँ एक तर्क युक्ति भी सुन्दर हो सकती है। यूक्लिड के ज्यामिति विज्ञान को अति सुन्दर तर्क माना जाता है।

सुन्दरता की सम्पूर्णता के लिए ज़रूरी है कि उसके अंग पूर्ण हों, अंगों का विकास ठीक हो और अंगों के परस्पर अनुपात में सन्तुलन हो।

सुन्दरता की इन तीनों कसौटियों को हम शुभ व्यवहारों पर लागू करते हैं। शुभ व्यवहार और उसके प्रेरित भाव एक पूर्णता बनाते हैं। किसी शुभ व्यवहार की सुन्दरता देखनी हो तो उसके भावों को भी सम्मिलित करना होगा। मान लो एक ठेकेदार अस्पताल के लिए दान में पैसा देता है। उसका भाव ऐसे जनों को ख़ुश करना है जो उसे ठेके देने में सहायक हो सकते हैं। एक-दूसरा ठेकेदार है जो इसी अस्पताल को पहले ठेकेदार जितना दान देता है लेकिन उसका भाव कृतज्ञता है।

जब वह बालक था तो उसके माता-पिता गरीब थे और उसने इस अस्पताल से सेवा पाई थी। और वह यह दान ऋण चुकाने के साधन से प्रेरित होकर देता है। इन दोनों शुभ व्यवहारों में कौन-सा सुन्दर है? जब हम शुभ व्यवहार और उसके परिचालक भाव को अंगीरूप साकल्य में देखते हैं, तो स्पष्ट हो जाता है कि जिस शुभ व्यवहार का अंग स्वार्थ है वह सुन्दर नहीं; और जिस व्यवहार का अंग कृतज्ञता है वह शुभ व्यवहार सुन्दर है।

मनुष्य के शुभ व्यवहारों में स्थूल और सूक्ष्म, ज्ञात और अज्ञात नीच भावों

विचारों को पढ़कर छोड़ देने से जीवन में कोई बदलाव नहीं आता है। विचार तभी बदलाव लाते हैं, जब विचारों को जीवन में उतारा जाता है। आओ, शुभ विचारों को आत्मसात् करें!

की मिलावट होती है। जब हम मनुष्यों के शुभ व्यवहारों को इनके प्रेरित भावों को सम्मिलित करके देखें तो हमें साक्षात् अनुभव होगा कि वह सुन्दरता की कसौटियों की दृष्टि से निम्न श्रेणी के रह जाते हैं।

यदि मनुष्य में नीच भाव बिलकुल न हों और केवल सात्विक भाव ही हों तो भी मनुष्य के शुभ व्यवहार और देवात्मा के शुभ व्यवहार में अन्तर होगा। मनुष्य की सात्विक गठन में त्रुटियाँ हैं। उसकी सात्विक गठन गिनती में पूर्ण नहीं। प्रत्येक सात्विक भाव में पूर्ण विस्तार नहीं। उसमें उचित गहराई नहीं। उसमें परिपाटी उचित नहीं। जब सात्विक भावों में यह त्रुटियाँ हैं तो वह सम्पूर्ण सुन्दरता की कसौटियों में पूरा नहीं उतरता। हम किसी एक सात्विक भाव को शरीर के किसी अंग के साथ उपमा देकर स्पष्ट कर सकते हैं। हम कृतज्ञता के सात्विक भाव को लेते हैं। हमने देखा कि हमारा कृतज्ञता का भाव सब उपकारियों के प्रति भावशील नहीं।

यदि हम शरीर के साथ उपमा दें तो हम कह सकते हैं कि हमारे सात्विक भावों में उसी तरह से अभाव हैं जिस प्रकार हमारे हाथ की अँगुलियाँ तीन हों। हमारे कृतज्ञता भाव में अपने उपकारियों के सम्बन्ध में जितनी गहराई होनी चाहिए, वह नहीं। हमारी कृतज्ञता भिन्न-भिन्न उपकारियों या एक ही उपकारी की भिन्न-भिन्न सेवाओं के प्रति जिस अनुपात में होनी चाहिए, वह नहीं।

हमारे सात्विक भाव उस तरह से हैं जैसे पहले हाथ की अँगुलियाँ तीन हों फिर जितनी मोटाई होनी चाहिए वह न हो और तीसरे जो अँगुली लम्बी होनी चाहिए वह छोटी हो और जो छोटी होनी चाहिए वह लम्बी हो, तो हाथ कितना कुरूप लगेगा। जब हम अपनी सात्विक गठन को एक सम्पूर्ण रूप में देख पाएँ तो हमें साक्षात् अनुभव होगा कि इसमें सुन्दरता का कितना अभाव है। अब सात्विक भाव को शुभ व्यवहार के साथ सम्मिलित करके इस सम्पूर्णता की परीक्षा करें तो पता लगेगा कि किस प्रकार शुभ व्यवहार की सुन्दरता कम रह जाती है।

मान लें कि मनुष्य के सात्विक भाव गिनती, विस्तार, गहराई और परिपाटी में पूर्ण हैं; तब भी सात्विक भावों की गठन में अशुभ और असत्य की प्रवृत्ति बनी रहती है जो चाहे व्यवहार का रूप न ले परन्तु विचार के रूप में प्रकट होती रहती है और इसलिए सात्विक भावों की गठन में यह सूक्ष्म कुरूपता बनी रहती है। भगवान् देवात्मा के सात्विक भावों की गठन का आधार सत्य और शुभ अनुराग है, इसलिए उनके सात्विक भावों की गठन में असत्य और अशुभकर विचारों की कुरूपता नहीं है। उनके

आसमान छू लेने का नाम सफलता नहीं, बल्कि असली कामयाबी या सफलता तब है, जब हम आसमान भी छू लें और हमारे पाँव भी ज़मीन पर रहें। काश, विनम्रता हमारा स्वभाव बन सके!

सात्विक भावों के सूर्य पर असत्य और अशुभ के बादल नहीं छाते।

मनुष्य के शुभ व्यवहार के प्रेरक सात्विक भावों में जितने कम नीच भावों की मिलावट होगी और सात्विक भावों की जितनी अधिक गिनती, विस्तार गहराई और परिपाटी होगी, उतने ही वह सुन्दर होते जायेंगे। परन्तु क्योंकि मनुष्य के लिए सब नीच भावों से मुक्त होना और सब सात्विक भावों की पूर्ण गठन को प्राप्त होना एक आदर्श सीमा है, इसलिए मनुष्य के शुभ व्यवहार थोड़ी या ज़्यादा मात्रा में सुन्दर हो सकते हैं। उनके सात्विक भावों में किसी स्थूल या सूक्ष्म नीच अनुराग या अहं भाव की मिलावट नहीं। उनके सात्विक भाव पूर्णतः पवित्र हैं। केवल यही नहीं, उनकी गठन में सात्विक भावों की गिनती में कोई कमी नहीं। उनके प्रत्येक सात्विक भाव के विस्तार, गहराई और परिपाटी में कोई दोष नहीं। भगवान् देवात्मा की सात्विक गठन गिनती, विस्तार, गहराई और परिपाटी में पूर्ण है इसलिए पूर्ण रूप से सुन्दर है। उनके शुभ व्यवहार सात्विक भावों की गठन की सुन्दरता से ज्योतिर्मान हैं। उनके शुभ व्यवहारों और सात्विक भावों का मेल अति सुन्दर सम्पूर्णता बनाता है। भगवान् देवात्मा के शुभ व्यवहार पूर्ण सुन्दरता सम्पन्न हैं।

इस भेद को एक और तरह से भी समझा जा सकता है। जब कोई शुभ व्यवहार किसी एक सात्विक भाव से किया जावे तो वह इस शुभ व्यवहार से कम मूल्यवान् है जो दो तीन सात्विक भावों से किया जावे। मान लो मैं हरिजनों को अधिकार दिलाने का शुभ कार्य करता हूँ। मैं यह शुभ व्यवहार न्याय के सात्विक भाव से परिचालित होकर करता हूँ। यह शुभ व्यवहार मूल्यवान् है।

परन्तु यदि मुझ में हरिजनों के लिए दयाभाव भी हो और इसके साथ मानवता प्रेम का भाव भी हो, तो उस शुभ व्यवहार में यह तीनों सात्विक भाव प्रेरित होंगे और मेरे शुभ व्यवहार को अपने रंगों में रंगेंगे। मेरा व्यवहार बहुरंगी और बहु मूल्यवान् होगा। जितने सात्विक भावों में इन्द्रधनुष के रंग होगे, उतना ही वह शुभ व्यवहार बहुमूल्य को प्राप्त होगा। मनुष्य के सात्विक भाव की गिनती एक या दो तक ही रह जाती है, जिसके फलस्वरूप हमारे शुभ व्यवहारों में इन्द्रधनुष के रंगों जैसी सुन्दरता नहीं होती। इसलिए चाहे मनुष्य और देवात्मा का कोई शुभ व्यवहार बाह्य दृष्टि से एक-रूप क्यों न हो, उनके आन्तरिक रूप में ज़मीन-आसमान का अन्तर है। देवात्मा के शुभ व्यवहार में पूर्ण इन्द्रधनुष समान सुन्दरता है, जिसका मनुष्य के शुभ व्यवहार में अभाव है।

हम कितने भी शक्तिशाली हों, लेकिन जब तक हम लोगों के दिल में नहीं उतरेंगे
और उनके अन्तर्मन को नहीं छुएंगे, तब तक मिलने
वाला प्यार व सम्मान अधूरा है।

अद्वितीय है रूप तुम्हारा (1)

प्रिय मित्रो! नीचे दिया गया यह आध्यात्मिक भजन 'विज्ञानमूलक सत्यधर्म प्रवर्तक एवं संस्थापक भगवान् देवात्मा' के एक अति महान् शिष्य, जिनका घर का पहला नाम अतरसिंह था तथा भगवान् देवात्मा ने जिनका नया नाम 'श्रीमान् देवत्व सिंह' रखा था, जो सिविल इंजीनियरिंग की उस समय की शिक्षा पास थे तथा जिन्होंने अपना जीवन देवात्मा के श्रीचरणों में भेंट कर दिया था तथा इसी मिशन में सेवाकारी होने हेतु शादी नहीं करवाई थी, के द्वारा लिखा गया है।

यह धर्म जगत् का एक ऐतिहासिक भजन है। यह भजन भगवान् देवात्मा तथा उनके भव्य सत्यधर्म का थोड़ा सा परिचय देता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक समय ऐसा आएगा कि यह गीत विश्व के सर्वोत्तम आध्यात्मिक गीत के रूप में विश्व-प्रसिद्ध होगा तथा सारे विश्व के सिर चढ़कर बोलेगा। जिस तरह हमारा राष्ट्रीय गीत भारत की आन, बान, शान है, ठीक उसी तरह उससे भी लाखों नहीं अपितु करोड़ों गुणा बढ़कर यह गीत 'विश्व गीत' के रूप में धर्मजगत् की शान को दुनिया के सम्मुख प्रकट करेगा। यह भजन नीचे उद्धृत किया जाता है। मेरा आपसे बार-बार अनुरोध है कि आप इस गीत को बार-बार विचारपूर्वक गाया करें।

आपको जीवन में भव्य पथ दर्शन प्राप्त होगा, जो बहुत आवश्यक, परम हितकर एवं परम कल्याणकारी है।

अद्वितीय है रूप तुम्हारा - जन-समाज में हे भगवन्,
अद्वितीय प्रकाश तुम्हारा - विश्व के भीतर हे भगवन्।
आत्मजगत् में अन्धकार के - तुम हो नाशक हे भगवन्;
जीवन विषयक तत्व ज्ञान के - तुम प्रकाशक हे भगवन्।
धर्म-अधर्म के सत्यज्ञान के - तुम हो दाता हे भगवन्;
आत्मरूप और सत्यधर्म के - तुम दर्शाता हे भगवन्।
पापी जनों के जीवन के तुम - सच्चे त्राता हे भगवन्;
महा-मोह के कठिन जाल से - मुक्तिदाता हे भगवन्।
पाप बोध पापी के भीतर -उत्पन्नकर्ता हे भगवन्;
पापमाला से उसके मन को - निर्मल कर्ता हे भगवन्।
योग्य जनों में उच्च जीवन के - विकसित कर्ता हे भगवन्;
धर्म कार्य करने हेतु - तुम बलदाता हे भगवन्।
विश्व के सारे ही जगतों के -तुम हितकर्ता हे भगवन्;

सिर्फ़ धन से अमीर नहीं हुआ जा सकता। असली अमीरी के लिए अच्छे भाव, अच्छी सोच, अच्छे विचार व अच्छे लोगों का साथ भी ज़रूरी है।

सम्बन्धों में उच्च मेल के -उत्पन्नकर्ता हे भगवन्।

ऐसा देवरूप जो तुमरा - उसको ध्याऊँ हे भगवन;

नगर-नगर में उसकी महिमा - मैं फैलाऊँ हे भगवन।

मेरे सुधि मित्रो! आगामी अकों में एक-एक पद के सरलार्थ करके आप सबकी सेवा में प्रेषित करने का प्रयास करूँगा। काश! हम सब अपने सच्चे एवं स्थाई आत्मिक शुभाकांक्षी के जीवन्त अनुगत बन सकें!!

अद्वितीय है रूप तुम्हारा (2)

प्रिय मित्रो! श्रीमान देवत्व सिंह जी के द्वारा लिखे गए उपरोक्त शीर्षक के अन्तर्गत भजन का पहला पद है -

'अद्वितीय है रूप तुम्हारा, जन समाज में हे भगवन;

अद्वितीय प्रकाश तुम्हारा, विश्व के भीतर हे भगवन्'

भजन के इस पद के शब्द जितने सरल हैं, उनके अर्थ उतने ही गूढ़ एवं सारगर्भित अर्थात् अति महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायक हैं। उपरोक्त पद के द्वारा भक्त अपने अद्वितीय गुरु अर्थात् 'विज्ञानमूलक सत्यधर्म प्रवर्तक भगवान् देवात्मा' को सम्बोधित करके लिखता है कि हे भगवन्! सृष्टि में जितने भी मनुष्य भूतकाल में हो चुके हैं, जितने भी मनुष्य वर्तमान हैं तथा जितने भी मनुष्य आगामी काल में जन्म लेंगे, उन सबकी तुलना में आप सदा-सदा के लिए अद्वितीय हैं। हे देव! विश्व में आपका आविर्भाव अद्वितीय अर्थात् अतुलनीय है। देवात्मा के सन्दर्भ में लिखे गए उपरोक्त शब्दों पर आपको विश्वास नहीं हुआ होगा। जब मैं भगवान् की शिक्षा में में नया-नया आया था, मुझ में भी देवात्मा के विषय में कहे गए उपरोक्त शब्द बहुत उलझन पैदा करते थे।

मुझे बचपन से ही एक ऐसे गुरु की चाह थी, जो सभी व्यक्तियों से महान् हो। आज मुझे देवात्मा की शरणागत हुए 45 वर्ष हो चुके हैं। उनके देवरूप के विषय में अध्ययन करते हुए अब धीरे-धीरे मुझ पर यह स्पष्ट होने लगा है कि देवात्मा सारे मनुष्यमात्र से अद्वितीय अर्थात् बेस्ट तो हैं ही, किन्तु वह सदा-सदा के लिए भी बेस्ट हैं। यह अति महत्त्वपूर्ण सत्य बहुत देर बाद स्पष्ट होने लगा है। मेरे सुधि मित्रो! अपने जीवनपथ में अग्रसर होने हेतु हम सबके लिए किसी महान् उद्देश्य एवं उसमें सहायक होने वाले दिव्य पुरुष के मार्गदर्शन की नितान्त आवश्यकता रहती है। हमारे मूल हित का सत्यज्ञान एवं बोध हमें मात्र देवात्मा ही दे सकते हैं, अन्य कोई नहीं, क्योंकि सृष्टि अर्थात् नेचर ने अपने भव्य क्रमिक विकास के अन्तर्गत देवात्मा को वह वह अद्वितीय

किसी को जो बेहतरीन तोहफ़े हम दे सकते हैं, उनमें से एक यह है कि हम उसे अपने जीवन का हिस्सा बनने हेतु धन्यवाद दें और उसके लिए मंगलकामना करें!

मानवता मिलकर भी नहीं कर सकती। देवात्मा हम सबके लिए प्रकृतिमाता का अनुपम दैवीय वरदान हैं। काश! हम सब पर यह परम सुन्दर, परम हितकर एवं कल्याणकारी रहस्य उजागर हो सके!!

– देवधर्मी

शोक समाचार

शोक का विषय है कि हमारे साथी सेवक श्री श्रवण कुमार जी शर्मा के बड़े दामाद श्री एनएस अरोड़ा का 19 अक्टूबर, 2024 को प्राय: 56 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। उनका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

रुड़की में गुलमोहर ग्रीन्स सोसाइटी में उनके निवास पर 20 अक्टूबर, 2024 को प्रात: 11 बजे उनके सम्बन्ध में शुभकामना का साधन डॉ. नवनीत जी ने करवाया, जिसमें पारिवारिक जनों के भिन्न स्थानीय साथी सेवक भी शामिल हुए।

(श्री श्रवण कुमार जी सम्पर्क सूत्र – 98371-77101)

आगामी शिविर हेतु श्रद्धालुओं और सेवकों का उत्साह और जिज्ञासाएं

उत्सुकता मेरी यह रहती है कि मुझे क्या-क्या नया सीखने को मिलेगा। सभा के क्या-क्या विषय होंगे। किन-किन लोगों से मिलने का मौक़ा मिलेगा। इनके क्या नये अनुभव जानने का मौक़ा मिलेगा।

पूर्व अनुभव – मेरे पूर्व अनुभव बहुत ही अच्छे रहे। मुझे 'शुभ हो!' का नया मंत्र मिला और परलोकवासियों से अपनी ग़लती के लिए क्षमा माँगने का अवसर मिला। शिविर और महाशिविर में मैं इसलिए जाना चाहता हूँ, क्योंकि इससे मेरी आत्मा की उन्नति होती है। नये लोगों और उनके अनुभव जानने का अवसर मिलता है। मुझे अपने अन्दर की कमियाँ जानने का अवसर मिलता है और उनको दूर करने के तरीके के बारे में पता चलता है। शिविर और महाशिविर में इसलिए भी जाना चाहता है क्योंकि इनमें जाकर मेरी हीलिंग होती है। हीलिंग से मुझे बहुत फायदा मिलता है।

– अर्पित सिंघल, (पंचकूला)

जीवन में प्यार होना ज़रूरी है, लेकिन प्यार किसी व्यक्ति से होना ज़रूरी नहीं है। यह किसी विचार, सपने या लक्ष्य से हो सकता है। इससे हम हर रोज़ एक नए उत्साह व ऊर्जा के साथ उठेंगे।

Goodness in Everyday Life

- Prof. S.P. Kanal

This is help given with grace

She inquired from him as to how the school was working. He told her that it was just making its way. But there were certain financial difficulties. She spontaneously offered a help of Rs. 25 per month and her mother who was also present also offered Rs. 10 per month in spite of her limited personal income.

Promises of contribution show a tendency to be postponed in their fulfilment and require personal visits or tactful reminders for their translation into action.

In this case the person, to whom she and her mother had promised, needed no reminding. He did not ask for it when he visited them in some other connection. But when he was about to leave, she brought Rs. 210 as her and her mother's contribution to the school to cover six months donation. This is help given with grace.

A charitable interpretation

He is the Principal of one of the colleges in Delhi University. There was a gentleman who showed surprise to him that a certain person should have opposed him in the meeting. The Principal at once responded to this statement by a remark like this, "No, And no. He did not oppose me; he opposed my views."

This charitable interpretation of the Principal reveals a rare emotional maturity and goodwill in him. We generally confuse between opposition to us with opposition to our point of view and grow enmity and hatred in the interpersonal relations. It is uncharitable disposition of us to think that those who are opposed to our stand-point are opposed to us. Such uncharitable interpretations feed our aggressiveness in us and set one against the other.The Principal, by his charitable interpretation, saved the situation from catching fire of mutual ill-will.

अच्छाई और बुराई दोनों हमारे अन्दर हैं, जिसका अधिक प्रयोग करोगे वो उभरती व निखरती जायेगी।

शुभ संग्राम

(15 से 18 नवम्बर, 2024)

पिछले दिनों बेटर लाइफ टीम के दो सदस्य प्रो. नवनीत जी अरोड़ा एवं श्री राजेश रामानी जी निम्न प्रकार सेवाकारी हुए -

15 नवम्बर, 2024

(शुक्रवार)

हनुमानगढ़ - रुड़की से चलकर सुबह 09:00 बजे प्रो. नवनीत जी यहाँ ट्रेन से पहुँचे तथा श्री प्रवीन छाबड़ा (एक नये जन) के परिवार में विज़िट किया। वहाँ एक घण्टा हितकर बातचीत से सभी ने लाभ उठाया। तदुपरान्त पदमपुर से श्री भोजराज जैन द्वारा भेजे गए वाहन व चालक की मदद से तलवाड़ा की ओर रवाना हुए।

तलवाड़ाखुर्द - प्रो.नवनीत जी यहाँ 11:00 बजे पहुँचे। श्री रामानी जी भोपाल से चलकर आज सुबह ही यहाँ पहुँचे थे। परलोकवासी उच्च धर्म सम्बन्धी श्री ओमप्रकाश जी के तीन सुपुत्रों के परिवार यहाँ रहते हैं। उन सबको लेकर रामानी जी साधन करवा रहे थे। अन्त में प्रो. नवनीत जी ने भी उन सबसे भगवान् देवात्मा की शिक्षाओं से जुड़ने की मार्मिक अपील की। 1700/- रुपये दान में मिले। यहाँ से श्रद्धावान् श्री विशाल सरदाना जी टीम के साथ हो लिये।

मलेकां - तीनों साथी 12:00 बजे यहाँ स्थानीय देव मन्दिर में पहुँचे। कुछ धर्मसाथी इंतज़ार कर रहे थे। प्राय: एक घण्टा तक हितकर बातचीत व संक्षिप्त साधन का सभी ने लाभ लिया। नवनिर्मित मन्दिर व व्यवस्थाओं को देखकर दोनों साथियों ने हर्ष लाभ किया। तदुपरान्त श्री जसविन्द्र पाल सिंह जी के निवास पर सभी ने मिलकर सहभोज किया। 1000/- रुपये दान में मिले। सिरसा से वापसी पर पुन: मलेकां में रुककर बहुत कीमती वयोवृद्ध धर्मसाथी श्रीमान् मेहर सिंह जी संधू की सेहत व हालात का पता लिया गया। वह काफ़ी समय से बहुत बीमार हैं। इसके बावजूद वह पहचान पाये तथा अपने टूटे फूटे शब्दों में अपनी हार्दिक प्रसन्नता का प्रकाश कर पाये तथा आते रहने को कहा।

सिरसा - तीनों साथी तीन बजे लाला सुमेर चन्द गर्ग जी के सम्बन्ध में शुभकामना कराने हेतु उनकी कॉटन मिल में पहुँचे। लाला जी के चार सुपुत्रों के पारिवारिक जन बड़ी उत्सुकता से इन्तज़ार कर रहे थे। श्री पुरुषोत्तम जी कंसल एक साथी के साथ तथा

उच्च भावों से हम व्यवहार कुशल भी बनते हैं और व्यवहार
कुशलता हमारे व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देती है।

श्री धर्मपाल जी महता सपत्नीक इस साधन में शामिल हुए। साधन में बहुत अच्छे प्रभाव बने तथा सभी ने जुड़ने की आकांक्षा व्यक्त की। परिवार की ओर से 51000/- रुपये दान में मिले। श्री कंसल जी ने भी 21000/- रुपये दान में दिये।

पदमपुर - उसी दिन सायं प्रायः चार घण्टे का सफर करके दोनों साथी पदमपुर पहुँच गये तथा श्री गिरधारी जी जैन के यहाँ भोजन व विश्राम किया। विश्राम करने से पुर्व रात्रि 10:00 बजे स्थानीय अरोड़वंश धर्मशाला में चल रहे श्री गुरु नानक देव जी के 555वें जन्मोत्सव में प्रवचन करने का प्रो. नवनीत जी को तीस मिनिट का अवसर मिला। उनके जीवन से क्या कुछ सीख सकते हैं, इस पर बहुत सधे शब्दों में प्रभावपूर्ण बयान से सभी लाभान्वित हुए।

16 नवम्बर, 2024 (शनिवार)

पदमपुर - आज के दिन स्थानीय चार विद्यालयों में सुबह 10:00 बजे से 04:00 बजे तक निरन्तर बेटर लाइफ टीम नें कार्य किया। यहाँ टीम में पाहवा जी, सेतिया जी, दौलत सिंह जी, सोनू बदलानी जी, रामकिशन जी व गुलशन जी शामिल हो गये।

- सर्वप्रथम 10:00 बजे एस0एस0आदर्श पब्लिक स्कूल में 1700 बच्चों ने उद्बोधन का लाभ लिया।
- तदुपरान्त 11:15 से 12:15 बजे तक बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में प्रायः तीन सौ बालिकाओं को उदबोधन दिया गया।
- इसके बाद 12:30 से 01:30 बजे तक शिवालिक चिल्ड्रन अकेडमी गाँव 25 बी0बी0 में 600 बच्चों को उदबोधन दिया गया।
- अन्त में 02:30 बजे से 03:30 बजे तक महात्मा गाँधी उच्चतर महाविद्यालय में प्रायः 300 बच्चों को उदबोधन दिया गया।
- उपरोक्त सभी उदबोधन प्रो. नवनीत जी ने दिये। अन्तिम विद्यालय में कक्षा 1 से 3 के बच्चों की नीती शिक्षा रामानी जी ने अलग से बिठाकर कराई।
- रात्रि 07:00 से 08:30 बजे तक 'मैं और मेरा परिवार' विषय पर स्थानीय नगर पलिका पार्क में स्थित शुभ धाम में साधन करवाया गया, जिससे प्रायः तीस प्रबुद्ध जन लाभान्वित हुए।

सकारात्मक विचार एक मूक प्रार्थना ही हैं और ये हमारे जीवन को धीरे-धीरे अवश्य बदल देंगे। आओ, ज़्यादा से ज़्यादा सकारात्मक विचारों में रहें।

17 नवम्बर, 2024

(रविवार)

पदमपुर – प्रातः 08:00 बजे श्री संदीप बिलन्दी जी के यहाँ विज़िट किया। तदुपरान्त श्री मनोज ज़िन्दल जी के यहाँ नाश्ता लेकर उनके संग गाँव 41 आर0बी0 की ओर रवाना हुए।

गाँव 41 आर0बी0 – पदमपुर से प्रायः 12 की0मी0 दूर स्थित हर प्रभ आसरा में 09:00 बजे पहुँचकर उसके संस्थापक सरदार हरि सिंह जी से भेंट की व दोनों ने एक दूसरे को गले मिलकर अतीव आत्मिक सुकून पाया। यहाँ इस आश्रम में प्रायः 650 अपाहिज, बेसहारा व मानसिक रोगी संरक्षण पा रहे हैं। आपको महाशिविर का निमंत्रण दिया गया, जिसे आपने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

पदमपुर – यहाँ 10:00 बजे श्री सोनू बदलानी जी के निवास पर पहुँचे तथा 11:30 बजे तक एक प्रभावशाली साधन कराया, जिसमें उनके पारिवारिक व अन्य मित्र शामिल हए। प्रायः 15 जनों ने लाभ उठाया। दोपहर का भोजन यहीं करके टीम श्री गंगानगर के लिए रवाना हुई। यहाँ से श्री पाहवा जी व श्री शंकर लाल बंसल जी टीम का हिस्सा बने।

श्री गंगानगर – दोपहर 01:30 बजे से 04:30 बजे तक स्थानीय परोपकारी संस्था – विद्यार्थी शिक्षा सहयोग समिति के 33वें वार्षिक उत्सव एवं प्रतिभा सम्मान समारोह में प्रो. नवनीत जी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस अवसर पर उनके प्रभावशाली उद्‌बोधन से प्रायः 250 जन बेहद प्रभावित हुए। इस अवसर पर ज़िले के प्रायः 30 प्रतिभाशाली जिन छात्रों को सम्मानित किया गया, उन्हें इस समिति की ओर से 'नई सोच नया सवेरा' के चारों भाग उपहारस्वरूप दिये गये। इसके भिन्न भी बेटर लाइफ की कई पुस्तकें समिति ने वितरण हेतु मंगवाईं। इस संदर्भ में प्रायः 13000/– रुपये प्राप्त हुए। यहाँ रात्रि विश्राम व भोजन व्यवस्था श्री भोजराज जी जैन के यहाँ रिद्धि-सिद्धि में थी। विश्राम से पूर्व रात्रि 08:50 से 09:45 तक 'नई सोच नया सवेरा' विषय पर प्रभावशाली उद्‌बोधन से प्रायः 25 प्रबुद्ध जन लाभान्वित हुए।

परदेश में विद्या सच्च मित्र, घर में पत्नी सच्ची मित्र, रोग में औषधि तथा मृत्यु के समय धर्म मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र होता है।

18 नवम्बर, 2024
(सोमवार)

श्री गंगानगर – प्रातः 09:00 बजे स्थानीय स्पेंगल पब्लिक स्कूल के चेयरमेन श्री नितिन कुमार के निवास पर विज़िट किया तथा उनके यहाँ नाश्ते के दौरान हितकर बातचीत होती रही।

गाँव कालियाँ – यहाँ श्री शंकर लाल जी सलूजा ने ग्रीन इंडिया की ओर से 'एक शाम गाँव की ओर' नामक एक बहुत बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें दस हज़ार वृक्ष लगाने का संकल्प लिया गया। श्री गंगानगर के गणमान्य व्यक्ति, गाँव के बहुत से लोग तथा कई सरकारी अधिकारी व विद्यार्थी शामिल हुए। प्रो. नवनीत जी को मुख्य वक्ता के रूप में इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था। आपने अपने उद्‌बोधन में गाँव में मिल सकने वाले संस्कारों और मूल्यों पर प्रेरणास्पद उद्‌बोधन दिया तथा कुछ मिनिट बच्चों को नीति शिक्षा भी दी। कुल मिलाकर 1300 जन लाभान्वित हुए।

श्री गंगानगर – स्थानीय स्पेंगल पब्लिक स्कूल में 02:00 बजे पहुँचकर प्रायः 25 अध्यापकों को प्रेरणास्पद उद्‌बोधन दिया।

गाँव ताखरावाली – श्री गंगानगर से प्रायः 30 कि0मी0 दूर इस गाँव में 03:30 बजे पहुँचकर प्रायः 130 ग्रामीण बच्चों की नीति करवायी। बच्चों का अनुशासन व जिज्ञासा देखते ही बनती थी। यहाँ के प्रधानाध्यापक श्री मुरारी लाल गक्खड़ वर्षों से अपने यहाँ साधन करवाकर व विभिन्न संस्थाओं में हमारी टीम को ले जाकर सेवाकारी बनते आ रहे हैं। यहाँ इस गाँव में पहुँचने के लिए बहुत ज़ोरदार आग्रह था, इसलिए टीम ने दोपहर का खाना छोड़कर यहाँ बच्चों के पास पहुँचना ज़्यादा ज़रूरी समझा। बच्चों का शुभ हो!

हनुमानगढ़ – दोनों साथी श्री भोजराज जैन जी के वाहन व चालक के साथ सायं 06:30 बजे यहाँ पहुँचे तथा रात्रि रेल से रुड़की आ गये।

इस सारे शुभ संग्राम में मिले प्रभावों, सफलता, सेवाओं के लिए सब सहयोगियों का शुभ हो! तथा सहायकारी शक्तियों का शुभ हो!

पाने वाले नहीं, देने वाले संसार के लिए प्रेरणास्रोत बनते हैं। आओ, हम
भी कुछ न कुछ किसी के लिए करें। धन दें, तन से सेवा करें।
और नहीं तो, मंगलकामना ही करें।

प्रेरणास्पद उद्बोधन सेवा

देहरादून – 19 अक्टूबर, 2024 को ग्राफिक एरा युनिवर्सिटी की ओर से प्रो. नवनीत अरोड़ा जी को 'Proctorial Role of a Teacher' विषय पर व्याख्यान हेतु आमन्त्रित किया गया। श्री आदेश सैनी जी साथ गए एवं बुक स्टॉल को संभाला।

व्याख्यान सत्र से प्रायः 30 प्राध्यापक लाभान्वित हुए। तदुपरान्त 60 विद्यार्थियों की नीति शिक्षा करवायी गई, जिसे उपरोक्त सभी प्राध्यापकों ने उसी हॉल में पीछे बैठकर ध्यान से सुना। सभी ने सकारात्मक प्रभाव लाभ किये।

तत्पश्चात हमारे युवा धर्मसाथी डॉ. नवीन कुमार जी के निवास स्थान पर दोनों धर्मसाथी गए। उनके परिवार से मिले व हितकर बातचीत से सभी ने लाभ उठाया।

हरिद्वार – 09 नवम्बर, 2024 को श्री कृष्णा हरि धाम, खड़खड़ी में समस्त ग्लोबल पंजाबी जागृति सोसायटी, फरीदाबाद की प्रबन्ध कार्यकारिणी सभा का आयोजन था। इस अवसर पर प्रो. नवनीत अरोड़ा जी को संक्षिप्त उद्बोधन का अवसर मिला, जिसमें उन्होंने नैतिक मूल्यों व चरित्र निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया, जिसका पूरी कार्यकारिणी ने उत्साहपूर्वक समर्थन किया एवं सहयोग का आश्वासन दिया। उपस्थित सदस्यों को 'जीवन का सुनहरा दौर' नामक पुस्तक वितरित की गई।

रुड़की – 14 नवम्बर, 2024 को बाल दिवस के अवसर पर स्थानीय मारवाड़ पाठशाला इण्टर कॉलेज, लाल कुर्ती में भारत विकास परिषद 'अविरल गंगा' की ओर से एक बाल मेले का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मिशन की ओर से एक बुक स्टॉल लगाया गया तथा श्री आदेश सैनी जी व श्री सुशील कुमार जी ने अपनी सेवाएं दीं। प्रायः 600/- रुपये की पुस्तकें बिकीं।

For mission details, Visit us : www.shubhho.com

सम्पर्क सूत्र : **सत्य धर्म बोध मिशन**

रुड़की (99271-46962), दिल्ली (98992-15080), भोपाल (97700-12311), सहारनपुर (92585-15124), गुवाहटी (94351-06136), ग़ाज़ियाबाद (93138-08722), कपूरथला (98145-02583), चण्डीगढ़(94665-10491), पदमपुर (93093-03537), अम्बाला (94679-48965), मुम्बई(98707-05771), पानीपत (94162-22258), लुधियाना (80542-66464)

स्वामी डॉ. नवनीत अरोड़ा के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री ब्रिजेश गुप्ता ने कुश ऑफसैट प्रैस, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी, जनता रोड, सहारनपुर में मुद्रित करवा कर 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की से प्रकाशित किया
सम्पादक – डॉ0 नवनीत अरोड़ा, डी – 05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई.आई.टी. परिसर, रुड़की
ज़िला हरिद्वार – 247667 (उत्तराखण्ड) 01332-285667, 94123-07242